केवल अनुपस्थित परीक्षार्थीओं के लिए : केवल 'बारकोड' अंकित यही एकमात्र पृष्ठ नीचे दी गई रेखा से काटकर पत्रक - A तथा पत्रक - B के साथ वापस भेजना है ।

इस प्रश्नपत्र में से कम या ज्यादा मात्रा में प्रश्न दिनांक ६ मार्च, २०१६ को होनेवाली मुख्य परीक्षा में पूछे जाएँगे । अभ्यास क्रम में सामिल पुस्तक की अंतिम संस्करण का ही उपयोग करें ।

बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था

सत्संग शिक्षण परीक्षा

पूर्व कसौटी : सत्संग परिचय : प्रश्नपत्र - २

जनवरी, २०१६ **समय : दौपहर २.०० से ४.१५** **कुल गुणांक : ७५**

स्वामिनारायण BAPS

अनुपस्थित परीक्षार्थी की उत्तर पुस्तिका का केवल यही पृष्ठ वापस भेजना है ।

☞ **परीक्षार्थी के नाम सम्बंधित विवरण के साथ 'बारकोड' अंकित किया गया है । कृपया उस पर किसी प्रकार का नुक़सान मत कीजिए ।**

मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्रश्न नंबर (गुण)	प्राप्तांक
	१ (९)	
	२ (६)	
	३ (५)	
	४ (५)	
	५ (५)	
	६ (८)	
विभाग-१, कुल गुण (३८)		

☞ **अनिवार्य : निम्न लिखित सूचना की परीक्षार्थी को अपने आप पूर्ति करनी है** ☜

बिना वर्ग निरिक्षक के हस्ताक्षर की उत्तर पुस्तिका मान्य नहीं होगी ।

दिनांक महिना वर्ष

परीक्षार्थी का जन्म दिन ☐☐ ☐☐ ☐☐☐☐

परीक्षार्थी का अभ्यास .....

परीक्षार्थी की उत्तर पुस्तिका पर अंकित नाम सहित अनिवार्य विवरण की सत्यता की जाँच करने के पश्चात् वर्ग निरिक्षक हस्ताक्षर करें ।

वर्ग निरिक्षक के हस्ताक्षर.....

मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्रश्न नंबर (गुण)	प्राप्तांक
	७ (९)	
	८ (६)	
	९ (५)	
	१० (५)	
	११ (६)	
	१२ (६)	
विभाग-२, कुल गुण (३७)		

☞ **पीछे दी गई सूचनाओं का अवश्य पालन करें ।**

परीक्षक के हस्ताक्षर .....

परीक्षक की नोंध :-

મોડરેશન વિભાગ માટે જ

ગુણ આંકડામાં ☐

શબ્દોમાં .....

ચેકરનું નામ

☞ परीक्षार्थीओं को महत्वपूर्ण सूचनाएँ ☜

१. परीक्षार्थी सत्संग प्रारंभ से प्राज्ञ - ३ तक की क्रमशः हर परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद ही अगली परीक्षा दे सकते हैं ।

२. सत्संग शिक्षण परीक्षा के मुख्य दिन परीक्षार्थी के नामलिखित मुख्य पृष्ठ परीक्षा कार्यालय द्वारा प्रिन्ट करके भेजा जाता है । उसके अनुसार ही परीक्षार्थी को परीक्षा की श्रेणी (प्रारंभ, प्रवेश, परिचय आदि...) एवं माध्यम (गुजराती, हिन्दी, English) में परीक्षा देनी होंगी । **इसमें किसी प्रकार का परिवर्तन करके दी गई परीक्षा मान्य नही होगी ।**

३. परीक्षार्थी को पूर्वकसौटी के प्रश्नपत्र की श्रेणी (प्रारंभ, परिचय, प्राज्ञ-१, केवल प्रथम.....) एवं परीक्षा के माध्यम (गुजराती, हिन्दी, English) अनुसार ही मुख्य परीक्षा देनी होगी । पूर्वकसौटी की जानकारी के अनुसार परीक्षा केन्द्र के मुख्य परीक्षा कार्यकर्ता को अंतिमसूची (Final List) भेजी जाती है, उसके अनुसार ही मुख्य परीक्षा के दिन परीक्षा देनी होगी । **अंतिमसूची से अलग दिये गए विवरणवाली परीक्षा रद्द मानी जाएगी और एसी उत्तर पुस्तिका का मूल्याकंन नहीं किया जाएगा ।**

४. मुख्य परीक्षा के दिन परीक्षा खंड में उपस्थित हर एक परीक्षार्थी अपनी नामलिखित उत्तर पुस्तिका लेकर तथा उसमें मांगा गया अन्य विवरण (जन्म दिनांक, शिक्षा) लिखकर वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर अवश्य करवा लें । **वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर बिना लिखी गई उत्तर पुस्तिका रद्द (केन्सल) मानी जाएगी और उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जाएगा ।**

५. परीक्षार्थी केवल ब्लू या काली स्याही वाली पेन से ही उत्तर पुस्तिका में उत्तर लिखें । पेन्सिल अथवा लाल, हरी या अन्य स्याही से लिखे गए उत्तर या एक से ज्यादा स्याही से **लिखी गई उत्तर पुस्तिका मान्य नहीं होगी ।**

६. सूचनानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए । काटकूट किए हुए उत्तर मान्य नहीं होंगे । अस्पष्ट और पढ़ा न जा सके, ऐसे उत्तर मान्य नहीं होंगे । **एक से ज्यादा प्रकार के अक्षरों की लिखावटवाली उत्तर पुस्तिका रद्द (केन्सल) मानी जाएगी और उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जाएगा ।**

७. **परीक्षा खंड के बाहर** अथवा अन्य सभी परीक्षार्थीओं से अलग या परीक्षा के नियमों का उल्लंघन कर के दी गई परीक्षा मान्य नहीं होगी ।

८. **सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय, अहमदाबाद की पूर्व अनुमति के बिना मूल परीक्षार्थी के बदले 'स्थानापन्न' या 'सबस्टीट्युट राइटर' अथवा 'दूसरे व्यक्ति' द्वारा लिखी गई परीक्षा की उत्तर पुस्तिका रद्द मानी जाएगी ।**

९. **सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय, अहमदावाद को पूर्व अवगत किए बिना, रजिस्टर्ड परीक्षा केन्द्र के बदले में अन्य परीक्षा केन्द्र से दी गई परीक्षा रद्द (केन्सल) मानी जाएगी और उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जाएगा ।**

१०. सत्संग प्रवेश, परिचय, प्रवीण एवं सत्संग प्राज्ञ (प्राज्ञ के दोनों प्रश्नपत्रों में रजिस्टर्ड हुए) के लिए परीक्षार्थियों को दोनों प्रश्नप्रत्रों की परीक्षा देनी अनिवार्य है । **किसी भी एक ही प्रश्नपत्र की दी गई परीक्षा की उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा ।**

११. **मुख्य परीक्षा के दिन उत्तर पुस्तिका के अलावा अतिरिक्त पन्नों में लिखे हुए उत्तरों का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा ।**

१२. **परीक्षा-कक्ष में परीक्षा के दौरान** किसी भी परीक्षार्थी को मोबाईल फोन तथा इलेक्ट्रॉनिक साधन जैसे टेब्लेट, लेपटॉप आदि का उपयोग करने तथा उसे अपने पास रखने की अनुमति नहीं है ।

१३. **प्राज्ञ की परीक्षा का फॉर्म भरने से पहले निम्नलिखित मुद्दे ध्यान में रखें ।**

- परीक्षार्थी एक ही साल में दोनो प्रश्नपत्र दे सकता है । अथवा पहले साल में पहला प्रश्नपत्र और दूसरे साल में दूसरा प्रश्नपत्र दे सकता है । **पहले प्रश्नपत्र में उत्तीर्ण (पास) होने के बाद ही दूसरा प्रश्नपत्र दिया जा सकता हैं ।** प्राज्ञ परीक्षा में केवल प्रथम प्रश्नपत्र या दूसरा प्रश्नपत्र देनेवाले को उत्तीर्ण होने के लिए उस प्रश्नपत्र में ४५ अंक प्राप्त करना आवश्यक है ।
- जिस परीक्षार्थी ने प्राज्ञ के दोनो प्रश्नपत्र में रजिस्ट्रेशन कराया हो और यदि वह परीक्षार्थी किसी एक प्रश्नपत्र में ही उपस्थित रहता है और दूसरे प्रश्नपत्र में अनुपस्थित रहता है, **तो एक प्रश्नपत्र की दी गई उत्तर पुस्तिका का मूल्याकंन नहीं किया जाएगा ।** जिस परीक्षार्थी ने प्राज्ञ के दोनों प्रश्नपत्र दिए हों, उसे उत्तीर्ण होने के लिए ९० अंक प्राप्त करने होंगे ।
- प्राज्ञ परीक्षा देने वाले सभी परीक्षार्थी कृपया ध्यान रखें कि जो परीक्षार्थी अलग-अलग साल में प्रश्नपत्र प्रथम और प्रश्नपत्र दूसरा देते हैं, उनको प्रथम प्रश्नपत्र ४५ या उससे ज्यादा अंक से उत्तीर्ण करने के बाद **दूसरा प्रश्नपत्र ज्यादा से ज्यादा एक ही साल के विराम के बाद देना होगा ।** एक से ज्यादा साल की अनुपस्थिति के बाद दिया हुआ दूसरा प्रश्नपत्र स्वीकृत नहीं होगा । **ऐसे परीक्षार्थी को पुनः प्राज्ञ का प्रथम प्रश्नपत्र अथवा दोनों प्रश्नपत्र देने होंगे ।**
- प्राज्ञ परीक्षा के पारितोषिक विजेता की सूची में आनेवाले परीक्षार्थी में से जिन्होंने प्राज्ञ के दोनों प्रश्नपत्र एक साथ एक ही साल में दिया हो, **उनको १० प्रतिशत (फिसदी) अंक पुरस्कार के रुप में दिए जाएगें** और इस तरह परीक्षार्थी पुरस्कार के योग्य माना जाएगा ।
- **नोंध :** जिस परीक्षार्थी ने **भारत की प्रवीण परीक्षा** उत्तीर्ण की हो, ऐसे ही परीक्षार्थी प्राज्ञ-१ परीक्षा दे सकते हैं ।

१४. **अवैद्य रजिस्ट्रेशन !!! परिणाम नहीं मिलेगा !!!**

विभाग – १ : किशोर सत्संग परिचय – प्रथम संस्करण, फरवरी – १९९९

प्र. १ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए । **[९]**

१. ''नहीं तो हम तुमसे अक्षरधाम में मिलेंगे ।''

कौन कहता है ? ..... किसको कहता है ? .....

कब कहता है ? .....

.....

.....

२. ''इतनी अधीरता से तुम क्यों रो रहे हो ?''

३. ''ऐसे भक्त की भगवान में कैसी प्रीति होनी चाहिए ?''

प्र. २ निम्नलिखित कथनों के बारे में कारण लिखिए । (दो से तीन पंक्ति में) **[६]**

१. सुंदरजीभाई को गर्व हो गया ।

.....

.....

.....

.....

२. मूर्ति में परमात्मा साक्षात् निवास करते हैं ।

३. गोरधनभाई की स्थिति अलौकिक थी ।

प्र. ३ 'बड़ी रामबाई (कड़वीबाई)' – **प्रसंग के बारे में १५ पंक्ति में टिप्पणी लिखिए । (वर्णनात्मक)** **[५]**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्र. ४ निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए । **[५]**

१. मंत्री पुत्र को क्यों बेचैनी होने लगी ?

.....

.....

२. जगजीवन किसका विरोधी था ?

३. बोचासण में कब किस मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा हुई ? (संवत्, मास, तिथी)

४. किसकी आलोचना कभी भी नहीं करनी और नहीं सुननी चाहिए ?

५. विष्णुदास और स्वरूपानंद स्वामी की निष्ठाभक्ति देखकर श्रीजीमहाराजने क्या किया ?

प्र. ५ 'हीरा किसी रीति से.....' - **'स्वामी की बात' पूर्ण कीजिए और इसके बारे में निरूपण लिखिए ।** **[५]**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्र. ६ निम्नलिखित कीर्तन / अष्टक / श्लोक आदि को सूचनानुसार पूर्ण कीजिए । **[८]**

१. सांभळ सहियर .....

..... जीवन बा'रे ।

२. ते मंत्र जेना ..... समरो सदाय ।

३. भवसंभव ..... भजे सदा ॥

४. धर्मो ज्ञेयः ..... भक्तिश्च माधवे ॥ - इस श्लोक का हिन्दी में अनुवाद लिखिए ।

विभाग - २ : प्रागजी भक्त - प्रथम संस्करण, नवम्बर - १९९८

प्र. ७ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए । **[९]**

१. ''काम करते जाओ और भगवान को भजते जाओ ।''

कौन कहता है ? ..... किसको कहता है ? .....

कब कहता है ? .....

.....

.....

२. ''भगवान स्वामिनारायण की महिमा समझाकर सत्संगी बनाते हैं ।''

३. ''इसलिए मैं आपको देख रहा हूँ ।''

प्र. ८ निम्नलिखित कथनों के बारे में कारण लिखिए । (दो से तीन पंक्ति में) **[६]**

१. प्रागजी भक्त अपना अधिकांश समय जूनागढ़ में स्वामी के साथ व्यतीत करने लगे ।

.....

.....

.....

.....

२. इसकी जड़ें तो पाताल तक चली गई हैं ।

३. यज्ञपुरुषदासजी ने भगतजी को गुरु के रूप में स्वीकार कर लिया ।

प्र. ९ निम्नलिखित किन्हीं <u>एक</u> प्रसंग के बारे में १५ पंक्ति में टूंकनोंध लिखिए । (वर्णनात्मक) **[५]**

१. मरा हुआ कुत्ता हटाया २. साक्षात्कार

( ) .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्र.१० निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए । **[५]**

१. वाघा खाचर ने गुणातीतानंद स्वामी से क्या कहा ?

.....

.....

२. पेटलाद में भगतजी ने फौजदार को संतों के बारे में क्या कहा ?

३. प्रागजी चुपके से कितना चूरमा चट कर गये ?

४. चूना तैयार करते वक्त प्रागजी को कोई क्या चेतावनी देता ?

५. वड़ोदरा के हरिभक्त को गोपालानन्द स्वामीने क्या कहा ?

प्र.११ निम्नलिखित विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए खाने में सही (✓) का निशान करें । **[६]**

सूचना : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं । सभी सही विकल्प के आगे ही सही का निशान किया होगा तभी पूर्ण गुण दिए जायेंगे, अन्यथा एक भी गुण नहीं दिया जाएगा ।

१. जूनागढ़ में अपूर्व सन्मान ।

(१) ☐ संत उसे दण्डवत् करें, ऐसा क्यों हैं ? (२) ☐ जलझीलनी के उत्सव में ।

(३) ☐ संत उनकी पूजा करे ? (४) ☐ चारों थनों का अमृत पी लिया ।

२. संतत्व की कला जिस ने सिद्ध की हो ।

(१) ☐ वह भगवान से दूर नहीं है ।

(२) ☐ ऐसा भक्त अनन्त जीवों के दु:ख दूर करने में सहायता करता है ।

(३) ☐ पंच-इन्द्रियों के विषयों को जीत लेते हैं ।

(४) ☐ अपने में संयुक्त कर देते हैं ।

३. पीठवड़ी में गोपालानंद स्वामी ने प्रागजी भक्त का परिचय कराया ।

(१) ☐ यह बालक तो पूर्वजन्म से भक्त है । (२) ☐ यह तो बहुत समर्थ है ।

(३) ☐ हज़ारों से भगवान का भजन करवाएगा । (४) ☐ ये तो महान भक्त होगा ।

प्र.१२ निम्नलिखित गलत वाक्य को उसके विषय के अनुलक्ष्य में सही लिखिए । **[६]**

सूचना :- संपूर्ण वाक्य सही लिखा होगा तो ही गुण प्राप्त होंगे, अन्यथा एक भी गुण प्राप्त नहीं होगा ।

उदाहरण : जूनागढ में अपूर्व सम्मान : जूनागढ के अमीन हरिभक्त आचार्य जटाशंकर ने अपने शिष्य मणिलाल भट्ट से कहा, ''यह जागा भक्त जैसे चमार खाँट के ऊपर बैठे हैं और आचार्य उसे दण्डवत् करते हैं ।''

उत्तर : जूनागढ में अपूर्व सम्मान : जूनागढ के **नागर** हरिभक्त **डॉ. उमियाशंकर** ने अपने **गुरु बालमुकुंददासजी** से **पूछा,** ''यह **प्रागजी भगत** जैसे **दरजी गद्दी के** ऊपर बैठे हैं और **संत** उसे दंडवत् करते हैं ।''

१. **अक्षर के ज्ञान का प्रत्यक्ष उत्तराधिकारी :** एक बार उत्सव के अवसर पर जागा भक्त गढ़डा नहीं पहुँच पाए, इसलिए महाराज के दर्शनों की उत्सुकता से वे उन्हें ढूँढते-ढूँढते कारियाणी आए। उस समय महाराज कुंडल में थे ।

उ. .....

.....

२. **अक्षर के ज्ञान का उद्घोष :** एक बार शास्त्रीजी महाराज वरताल मन्दिर के कोठारी जीभाई से स्वामी के गुण के बारे में बातें कर रहे थे ।

३. **अन्तिम लीला :** पोष कृष्ण १४, संवत् १८५८ के दोपहर से ही डुंगरभक्त की देहदशा सोचनीय हो गई थी । अचानक डुंगरभक्त ने बोलना प्रारम्भ कर दिया, मुझे जूनागढ़ ले चलो ।

४. **गूदड़ी में लाल :** उसे वरदान देना तो अभी शेष है । वह तो अनादि मुक्त है । तीसरा तो कोई भी इस तरह से साधना नहीं कर सकता ।

५. **कंटकाकीर्ण मार्ग-विरोध का आरम्भ :** जागा भक्त ने हँसते हुए कहा, स्वामी, कल तो रघुवीरजी महाराज भी आपको विचरण नहीं करवा सकते ।

६. **अब मैं प्रागजी द्वारा प्रगट रहूँगा :** तत्पश्चात् आश्रम के कुछ काम प्रागजी भगत को सौंप दिए और कुछ अन्य आचार्य के पार्षदों को काम सौंप कर फिर परदेश में विचरण के लिए आश्रम से निकले ।

* * *

☞ **अगत्य की सूचना : सभी परीक्षार्थी अपनी संस्था की निम्नलिखित website - link पर से पुराने सालों के प्रश्नपत्र और उसके उकेलपत्र नि:शुल्क डाउनलोड कर सकते हैं और उसकी प्रिन्ट भी निकाल सकते हैं ।**

http://www.baps.org/Satsang-Exams.aspx